परिसर प्रतिबिंब

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी | गांधी अंक | अक्टूबर, 2020

कुलपति की कलम से

इस वर्ष हम सभी समग्र विश्व एवं मानवता के पथ प्रदर्शक महात्मा गांधी जी की सार्द्धशती माना रहे हैं। अगर हम गांधी जी की संपूर्ण जीवन यात्रा पर दृष्टिपात करते हैं तो यह देखते है कि उनकी जीवन यात्रा साधारणता से विशिष्टता की यात्रा है, अपने कर्मो से महानता अर्जित करने की यात्रा है, विचार से आचरण की यात्रा है, मानव से महामानव होने की यात्रा है, व्यवहार से आदर्श बनने की यात्रा है और भारत से विश्व भर की यात्रा है। उन्होंने शान्ति, अपरिग्रह, क्षमा, अहिंसा, सत्याग्रह के भारतीय सनातन विचार और दर्शन को मूर्त रुप ही नहीं प्रदान किया बल्कि इन्हें वैश्विक राजनीति का पथ प्रदर्शक सिद्धांत भी बनाया। मूल्यों की राजनीति और राष्ट्रनीति प्रेरित राजनीति से गांधी जी ने समस्त विश्व को एक नई सोच दी। गांधी जी के विचार आज सम्पूर्ण विश्व के समसामयिक समा. जार्थिक शोध के केंद्र में हैं।

गांधी जी की प्रथम कर्मभूमि चंपारण की इस पावन धरती पर महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय उनके दर्शन एवं विचारों को मूर्तरूप प्रदान करने हेतु विभिन्न प्रकार से कटिबद्ध है। यह अन्यंत हर्ष व अतिशय प्रसन्नता का विषय है कि गांधी जी के 150 वीं जयंती वर्ष के उपलक्ष्य में विश्वविद्यालय विविध समारोहों के माध्यम से गांधी जी की स्मृतियों को जीवंत करने हेतु वर्ष भर सतत् प्रयासरत रहा है। इसी कड़ी में दोनों परिसरों में महात्मा गांधी की आवक्ष प्रतिमा को प्रतिष्ठापित किया गया। विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर के वर्तमान भवन का नामकरण गांधी भवन के रूप में किया गया। स्वतंत्रता सेनानी तथा वरिष्ठ गांधीवादी श्री ब्रजकिशोर सिंह के सौजन्य से एक राष्ट्रीय पुरस्कार प्रारंभ किया गया जिसके अंतर्गत गांधी दर्शन एवं चिंतन पर विगत वर्ष में प्रकाशित पुस्तक को पुरस्कृत किया जाएगा। वर्ष भर विश्वविद्यालय ने विविध आयोजनों के माध्यम से गांधी जी के विचारों को जीवन्त करने का प्रयास किया है। आप सभी को गांधी जी के सार्द्धशती वर्ष की हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं।

प्रो. संजीव कुमार शर्मा

विश्वविद्यालय में स्थापित हुआ गांधी शोध केंद्र

चाणक्य परिसर में बापू की आवक्ष प्रतिमा का अनावरण

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के दर्शन, कृतित्व एवं विचारों के विभिन्न आयामों का अध्ययन और अनुसंधान के लिए गांधी शोध केंद्र की स्थापना की गई। इसकी घोषणा विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर में महात्मा गांधी जी के प्रतिमा अनावरण के अवसर पर अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने की थी। विश्वविद्यालय द्वारा इस संबंध में आदेश भी जारी कर दिया गया है। गांधी शोध केंद्र विश्वविद्यालय के समाज विज्ञान संकाय के अंतर्गत संचालित होगा।

गांधी शोध केंद्र की स्थापना के लिए प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक श्री बृज किशोर सिंह जी ने एक लाख रुपये विश्वविद्यालय को दिए हैं। इस बात की घोषणा श्री सिंह ने गांधी जी के मूर्ति अनावरण के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में संबोधन में की। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने प्रसिद्ध गांधीवादी विचारक श्री बृज किशोर सिंह जी का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि विश्वविद्यालय में गांधी शोध केंद्र की स्थापना से गांधी के विचारों–नीतियों को जानने एवं समझने में मदद मिलेगी, साथ ही इससे विशेषकर युवाओं में गांधी के प्रति समझ विकसित होगी। गांधी शोध केंद्र की स्थापना से विश्वविद्यालय डीएसडब्ल्यू प्रो. आनंद प्रकाश, समाज विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजीव कुमार, प्रो. आशीष कुमार श्रीवास्तव, प्रो. पवनेश कुमार, प्रो. सुनील महावर, डॉ. एम. विजय शर्मा, डॉ. प्रशांत कुमार, डॉ. प्रीति बाजपेयी समेत सभी शिक्षकों ने प्रसन्नता जाहिर की।

गांधी भवन परिसर में गांधी जी की प्रतिमा स्थापित

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के स्थायी परिसर गांधी भवन में महात्मा गांधी जी की आवक्ष प्रतिमा का अनावरण माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने किया। आयोजित समारोह में कुलपति प्रो. शर्मा ने कहा कि गांधी जी के नाम पर चंपारण की पावन भूमि पर स्थापित हमारा विश्वविद्यालय बापू के स्वप्न एवं आदर्शों को पूरा करने के लिए संकल्पित है। हमारे विद्यार्थी और शिक्षक बापू के आदर्शो को अपने जीवन में समाहित करने को प्रतिबद्ध हैं और बापू के आशीर्वाद से अपने स्थापना के शैशवकाल में ही हमारा विश्वविद्यालय वैश्विक पटल पर अपनी पहचान स्थापित करने को तत्पर है। उन्होंने संदेश देते हुए कहा कि आप मात्र गांधी जी को याद नहीं करें बल्कि बापू को जीने का प्रयास करें। अनावरण समारोह में गांधी भवन परिसर के निदेशक प्रो. राजीव कुमार, प्रो. पद्माकर मिश्रा, प्रो. आनंद प्रकाश, प्रो. सुनील महावार समेत सभी शिक्षक एवं शिक्षकेत्तर कर्मचारी उपस्थित थे।

विश्वविद्यालय के मुख्य द्वार के शिलान्यास समारोह में माननीय सांसद श्री राधामोहन सिंह, कला एवं संस्कृति मंत्री श्री प्रमोद कुमार एवं माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा

विभिन्न पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए 9630- आवेदन

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार में स्नातक, परास्नातक, एम फिल और पी-एच डी पाठ्यक्रमों में प्रवेश के लिए सत्र-2020-21 हेतु कुल 9630 आवेदन पत्र अभ्यर्थियों द्वारा भरें गये हैं। जिसमें स्नातक के 1476फॉर्म में से पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान में 166, बी टेक (कम्प्यूटर विज्ञान और अभियांत्रिकी) में 652 और इस साल से प्रारम्भ नवीन पाठ्यक्रम पत्रकारिता एवं जनसंचार स्नातक में 271 एवं वाणिज्य ऑनर्स में 387 आवेदन पत्र प्रवेश के लिए अभ्यर्थियों द्वारा भरें गये हैं।

20 विषयों के पी–एच. डी. में प्रवेश के लिए सर्वाधिक 4552 ने भरा फार्म

इसी तरह परास्नातक पुस्तकालय एवं सूचना विज्ञान, पत्रकारिता एवं जनसंचार, शिक्षा शास्त्र, संस्कृत, गांधी एवं शांति अध्ययन, वाणिज्य (एम. काम.), एम. बी. ए., एम.टेक., अंग्रेजी, हिंदी, बायोटेक्नोलॉजी, वनस्पति विज्ञान, जंतुविज्ञान, रसायन विज्ञान, गणित, भौतिक विज्ञान, अर्थशास्त्र, राजनीति विज्ञान, समाज कार्य और समाज शास्त्र विषयों में प्रवेश के लिए 2708 आवेदन पत्र आये हैं। साथ ही एम. फिल. के कुल 19 विषयों में प्रवेश के लिए 894 छात्रों ने आवेदन पत्र भरें है। सबसे अधिक संख्या पी–एच. डी. के विभिन्न विषयों में प्रवेश के लिए अभ्यर्थियों ने आवेदन पत्र भरें है। कुल 20 विषयों में 299 सीटों के लिए पी–एच. डी. प्रवेश हेतु 4552 अभ्यर्थियों ने फार्म भरा हैं। इतनी अधिक संख्या में देश के कोने–कोने से अभ्यर्थियों द्वारा प्रवेश हेतु भरें गये आवेदन पत्र से विश्वविद्यालय परिवार में प्रसन्नता की लहर हैं। दीनदयाल उपाध्याय परिसर के निदेशक एवं जनसम्पर्क प्रकोष्ठ के अध्यक्ष प्रो. पवनेश कुमार ने बताया कि कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा के कुशल नेतृत्व में विश्वाविद्यालय निरन्तर प्रगति पथ पर अग्रसर है। उनके अकादमिक एवं प्रशासनिक कौशल से विश्वविद्यालय में शोध एवं अध्ययन– अध्यापन का स्वस्थ और गुणवत्तापूर्ण माहौल तैयार हुआ है। विभिन्न विषयों के सुयोग्य अध्यापकों की टीम ने विश्वविद्यालय में बेहतर शैक्षणिक माहौल तैयार किया हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने प्रसन्नता जताते हुए कहा कि यह अत्यंत गौरव की बात है की विश्वविद्यालय जिन उद्देश्यों और संकल्पो को साथ में लेकर चल रही उसमे वह पूरी तरह सफल है। इतनी बड़ी संख्या में छात्रों के द्वारा प्रवेश के लिए आये फॉर्म यह साबित करते है कि महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय पर देश के विभिन्न भागों के छात्रों और अभिभावकों ने भरोसा जताया है, जिसे हमें चुनौतीपूर्ण ढंग से लेना होगा। इसके लिए जरूरी है कि हम निरन्तर अच्छा करने का प्रयास करें।

प्रकृति के साथ समन्वय, संबंध और ईश्वर के प्रति विश्वास जरूरी–प्रो. मिश्र

पंडित दीनदयाल का एकात्म दर्शन एवं वर्तमान भारत विषय पर संगोष्ठी

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के समाज विज्ञान संकाय और मीडिया अध्ययन विभाग के संयुक्त तत्वावध.ान में पंडित दीनदयाल का एकात्म दर्शन एवं वर्तमान भारत विषय पर आज विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने की तथा कार्यक्रम को विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रोफेसर जी गोपाल रेड्डी का सानिध्य प्राप्त हुआ। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने पंडित दीनदयाल उपाध्याय को महान युगद्रष्टा, कुशल संगठनकर्ता , लेखक, पत्रकार और एकात्म मानव दर्शन का प्रेणता बताया।

गोष्ठी के मुख्य अतिथि राजनीति विज्ञान विभाग लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर. के. मिश्र ने पंडित दीनदयाल के एकात्मदर्शन को समझाते हुए कहा "एक सुंदर से मनुष्य का अर्थ ऐसे मनुष्य से है, जो शरीर आत्मा बुद्धि और भावना चारों दृष्टि से परिष्कृत हो। उसकी राष्ट्र के प्रति एक मां के प्रति निष्ठा होनी चाहिए। विश्व के साथ साहचर्य होना चाहिए। प्रकृति के साथ समन्वयक संबंध और अंततः ईश्वर के साथ प्रेम और विश्वास हो। व्यक्ति एकात्म मानवदर्शी होता है। पंडित दीनदयाल का मत था कि स्वतंत्रता के बाद भारत की पुनर्रचना किसी अन्य देश से आयातित दर्शन के बजाय अपने इतिहास और संस्कृति के आधार पर होनी चाहिए।उन्होंने इस क्षेत्र में महात्मा गांधी के विचारों को आगे बढ़ाया जो मानते थे कि भारत का पुनर्निर्माण भारतीयता पर हो और इसके लिए उन्होंने ब्लूप्रिंट भी तैयार कर रखा था। उनका एकात्म दर्शन गांधी के हिंद स्वराज की भांति पूर्णतः भारतीयता पर आधारित था। मुख्य वक्ता राजनीति विज्ञान विभाग, काशी हिंदू विश्वविद्यालय के प्रोफेसर कौशल किशोर मिश्र ने अपना विचार रखते हुए कहा जिस प्रकार पूर्व में पश्चिमी विचारों से ग्रसित राजनीति और बुद्धिजीवी समाज से पंडित दीनदयाल अछूत रहे वर्तमान के बदले हुए परिवेश में भी उन्हें अकादमी ग्रुप से उपेक्षित रखा गया है। आज भी राजनीति विज्ञानियों अर्थशास्त्रियों और समाज शास्त्रियों ने उन्हें अकादमी ग्रुप से स्वीकार नही किया। आज जब कोरोना काल में समाजवाद, साम्यवाद और अमेरिका का पूंजीवाद धराशाई है तब भारत के व्यवहारिक और सांस्कृतिक दर्शन ने इस महामारी पर विजय हासिल की है।

नई शिक्षा नीति में भी दीनदयाल का चिंतन और दर्शन दिखता है। उन्होंने वैदिक काल से चले आ रहे भारतीय जीवन दर्शन का समुच्चय एकात्म मानव दर्शन के रूप में स्थापित किया।जब मूवी समाजवाद और पूंजीवाद के संघर्ष में भी दूरियां था तब उन्होंने अत्यंत साहसिक कदम उठाते हुए सबसे अलग भारतीय दर्शन की स्थापना की। संगोष्ठी में विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित इतिहास, संस्कृति और पुरातत्व विभाग, केंद्रीय विश्वविद्यालय, हिमाचल प्रदेश के एसोसिएट प्रोफेसर कंवर चंद्रदीप सिंह ने कहा पुरानी सरकारों द्वारा पंडित दीनदयाल जैसे विलक्षण व्यक्तित्व के विचार को हाशिए पर धकेल दिया गया। पंडित दीनदयाल ऐसे बुद्धिजीवी थे जिनके बौद्धिकता का मूल भारतीयता है। समाजवाद और साम्यवाद को परिपूर्ण बताते हुए उन्होंने अखंड राष्ट्रवाद और एकात्म मानववाद की राजनीतिक रूप से भी सशक्त विचारधारा स्थापित की जो आगे चलकर नेताओं के साथ–साथ दलों का भी राजनीतिक आधार बना। वे बौद्धिक और राजनीतिक रूप से किसी को अछूत नहीं मानते थे। उन्होंने आलोचना के लिए खुद को खुले मंच पर रखा, हर विचारधारा को जाना परखा ताकि जो अच्छी बातें छन कर निकले उसे अपने जीवन में परिष्कृत किया जा सके। सर्वप्रथम इन्होंने ही गौ माता को सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में लोगों के समक्ष रखा।

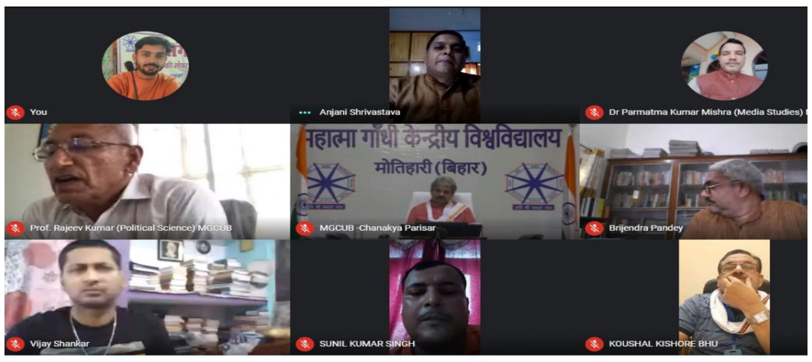

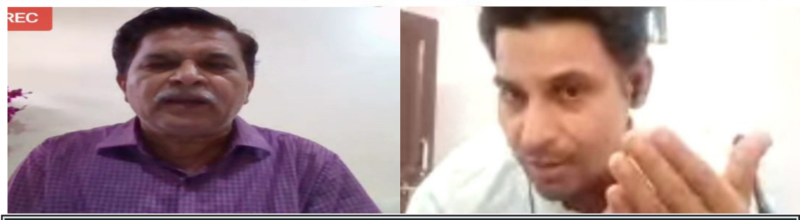

अतिथियों का परिचय हिंदी विभाग, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी के डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने दिया। समाज विज्ञान संकाय महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के अधिष्ठाता प्रोफेसर राजीव कुमार ने धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन मीडिया अध्ययन विभाग के डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र ने किया। कार्यक्रम में मीडिया अध्ययन विभाग के विभागाध्यक्ष एवं आयोजक डॉ. प्रशांत कुमार की समेत डॉ. अंजनी कुमार झा, डॉ. साकेत रमण, डॉ. नरेंद्र कुमार सिंह, डॉ. सुनील दीपक घोड़के, डॉ. उमा यादव एवं विभिन्न विभागों के शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी और देश के कई राज्यों से प्रतिभागी विद्वान, शिक्षक एवं छात्र उपस्थित रहे।

थ्री सिक्सटी डिग्री क्लाउड कम्पनी में आदर्श चयनित

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कम्प्यूटर विज्ञान विभाग के विद्यार्थी आदर्श कुमार का चयन प्लेसमेंट सेल द्वारा डेवलपर के पद पर हुआ है। संकाय के अध्यक्ष प्रो विकास पारीक ने बताया कि उनके बी टेक के अन्तिम साल के विद्यार्थी आदर्श कुमार का चयन थ्री सिक्सटी डिग्री क्लाउड कम्पनी में 3 लाख के सलाना पैकेज पर हुआ है। यह चयन वर्चुअल प्लेसमेंट ड्राइव द्वारा तीन चरणों में चली परीक्षा द्वारा हुआ है। इस चयन पर विभागाध्यक्ष डॉ पवन चौरसिया समेत विभाग के सभी शिक्षकों ने खुशी जाहिर किया।

विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो संजीव कुमार शर्मा जी ने इस चयन पर प्रसन्नता जताते हुए पूरे विभाग को बधाई दी है। उनहोंने विभाग को सभी विद्यार्थियों के यथासमय प्लेसमेंट के लिए अनथक प्रयास करने के लिए आशा जताई है व सभी सम्भव प्रोत्साहन व सुविधा का विश्वास दिलाया।

प्रो. आशीष श्रीवास्तव यंग लीडर अवार्ड से सम्मानित

महात्मा गाँधी केंद्रीय विवि के शिक्षाशास्त्र विभाग के विभागाध्यक्ष एवं अधिष्ठाता प्रो. आशीष श्रीवास्तव को सर्वोत्कृष्ट युवा अकादमिक नेतृत्वकर्ता के रूप में यूनाइटेड स्टेट्स् ऑफ अमेरिका के प्रतिष्ठित माया गोल्ड फाउंडेशन की तरफ से सम्मानित किया गया।

इसपर प्रसन्नता जाहिर करते हुए प्रो. श्रीवास्तव ने कहा कि यह उपलब्धि मेरी व्यक्तिगत उपलब्धि नहीं है अपितु यह हमारे समस्त संकाय सदस्यों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के साथ साथ पूरे विश्वविद्यालय परिवार की उपलब्धि है। केविवि के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने इस उपलब्धि हेतु प्रो. श्रीवास्तव समेत शिक्षा शास्त्र संकाय के सदस्यों के लिए अपनी शुभकामनाएं प्रेषित की।

हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, बिहार के हिंदी विभाग द्वारा 14 सितंबर, 2020 को 'हिंदी दिवस' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इसके साथ ही विश्वविद्यालय में "हिंदी पखवाड़ा" का भी शुभारंभ हुआ जो कि 28 सितंबर, 2020 तक चलेगा। इस पखवाड़े के अंतर्गत कविता पाठ प्रतियोगिता, भाषण प्रतियोगिता तथा राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन भी किया जाएगा। हिंदी दिवस कार्यक्रम के आयोजन के अवसर पर महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा, मुख्य अतिथि थे। कार्यक्रम की अध्यक्षता हिंदी विभाग के अध्यक्ष व मानविकी एवं भाषा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजेंद्र सिंह ने की। हिंदी विभाग में एसोसिएट प्रोफेसर अंजनी कुमार श्रीवास्तव कार्यक्रम में मुख्य वक्ता थे। सर्वप्रथम दीप–प्रज्ज्वलन से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

मुख्य अतिथि प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने संस्कृतनिष्ठ हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग पर बल देते हुए कहा कि बाबा साहेब भीमराव अंबेडकर ने संविधान सभा में संस्कृत को ही राजभाषा बनाने का प्रस्ताव दिया था । भारत की सभी भाषाओं में संस्कृत के शब्द हैं। संस्कृत के माध्यम से भारत की सभी भाषाओं से जुड़ा जा सकता है। हिंदी, संस्कृत की उत्तराधिकारिणी है। संस्कृतनिष्ठ हिंदी के बारे में मिथ गढ़ा गया है। यह कठिन नहीं है बल्कि अभ्यास से इसे संस्कार और व्यवहार में सम्मिलित किया जा सकता है।हिंदी को राजभाषा और राष्ट्रभाषा के रूप में स्थापित करने का दायित्व सामूहिक रूप से हम सभी का है। प्रो. राजेंद्र सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में हिंदी भाषा के महत्व की चर्चा करते हुए कहा कि हिंदी स्वाभिमान और संस्कार की भाषा है। उन्होंने हरियाणवी लोकगीत की कुछ पंक्तियों का भी सस्वर पाठ किया। मुख्य वक्ता डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने अपने वक्तव्य में कहा कि हिंदी संसार की सबसे प्रभावशाली भाषाओं में से एक है।संपर्क भाषा, मीडिया की भाषा, साहित्य की भाषा और बोलने वालों की संख्या की दृष्टि से हिंदी अत्यंत समर्थ और समृद्ध है।

कार्यक्रम में डॉ. गोविंद प्रसाद वर्मा ने उपस्थित जनों का स्वागत किया तथा डॉ. गरिमा तिवारी ने धन्यवाद ज्ञापन किया। हिंदी विभाग के सहायक आचार्य श्री श्याम नंदन ने अपने सफल संचालन से उपस्थित लोगों को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कई वरिष्ठ प्राध्यापक तथा शिक्षणेतर प्रशासनिक अधिकारी एवं कर्मचारी उपस्थित रहे।

मीडिया विभाग ने आयोजित की अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

भारतीय सिनेमा से गायब है भारत –विवेक अग्निहोत्री

पुष्कर ठाकुरः

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग ने नेपोटिज्म इन इंडियन सिनेमाः इश्यूज एंड कन्सर्न विषय पर अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया। मुख्य अतिथि प्रख्यात फिल्म निर्देशक श्री विवेक अग्निहोत्री ने अपने वक्तव्य में कहा आज हम सब लोग भारत को प्रबल बनाने के लिए समाज में पुरानी चली आ रही है रूढ़िवादी और भ्रष्ट प्रथाएं जो देश तथा लोगों के विकास को रोकती है उन प्रथाओं को बदलने के लिए आज भारत का युवा और जनमानस प्रयत्न कर रहा है। हम सब चाहते हैं आज भारत अपनी ताकत के साथ पूरे विश्व में आगे बढ़े। आज की फिल्मों से आम आदमी, भारतीय जीवन मूल्य और संस्कार या कहें तो पूरा का पूरा भारत ही गायब है। नेपोटिज्म की व्याख्या बाजार के नियम से की जाए, इसे समाज के नियम से देखा जाए, देश की उन्नति के नियम से देखा जाए, जिस को मौका मिलना चाहिए उसे इसलिए मौका नहीं मिलता है क्योंकि वह किसी की चमचागिरी नहीं करता है या भाई–भतीजावाद में नहीं आता है और जिस को आगे बढ़ाने के लिए कंधे पर किसी का हाथ नहीं है। इसलिए अपने जीवन में वंचित रह जाता है और उसको जहां पहुंचना चाहिए वहां नहीं पहुंच पाता है।

विवेक अग्निहोत्री ने आगे बताया बॉलीवुड में नेपोटिज्म का मतलब यह नहीं है कि आप अपने बेटे या बेटी को काम देते हैं उसमें कुछ गलत बात नहीं है। अगर आपके बेटे में काबिलियत है वह अच्छा सिंगर है, वह किसी प्रकांड पंडित के साथ संगीत सीखा है और अच्छा गा सकता है। तो उसे गाने का मौका क्यों नहीं देना चाहिए ? समस्या तब आती है जब आप अपने बेटे और बेटी के करियर को बढ़ाने के लिए जब उसमें काबिलियत नहीं है तब किसी और समर्थ मेरिट वाले लड़के और लड़की को आगे नहीं बढ़ने देते हैं अगर वह आगे बढ़ता है तो उसके कैरियर को खत्म करने के लिए पूरी ताकत लगा देते हैं, इसे ही नेपोटिज्म बोला जाता है। पूरे विश्व में जितने बच्चे पैदा होते हैं वे अपने आप में क्रिएटिव होते ही हैं लेकिन सबको अपनी प्रतिभा दिखाने का अवसर नहीं मिल पाता है। क्रिएटिविटी को हमारे देश में हतोत्साहित किया जाता है। अंतरराष्ट्रीय वेब संगोष्ठी के मुख्य संरक्षक महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय बिहार के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा "वैसे तो भाई –भतीजा वाद हर क्षेत्र में है लेकिन यह जितना व्यापक रूप से फिल्म इंडस्ट्री में है और जितने ज्यादा लोगों को प्रभावित करता है उतना किसी अन्य क्षेत्र में नहीं करता है। यदि कोई मेहनत करके परिवारिक पृष्ठभूमि के कार्यों को आगे बढ़ाता है तो उसका स्वागत किया जाना चाहिए किंतु कोई योग्य ना होते हुए भी योग्य व्यक्तियों को आगे बढ़ने से रोके तो हमें ऐसे व्यक्तियों का सामाजिक बहिष्कार करना चाहिए। सबसे पहले तो हमें फिल्म इंडस्ट्री में अपने आदर्श खोजना बंद करने होगा

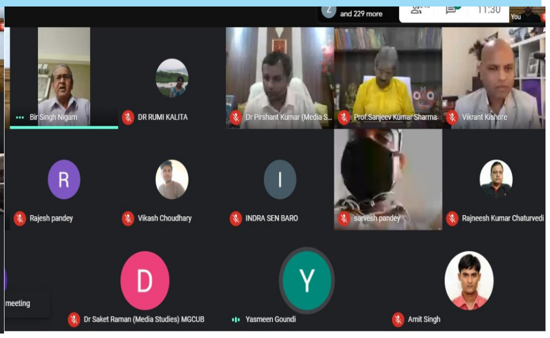

मुख्य वक्ता डेकिन यूनिवर्सिटी, आस्ट्रेलिया के फिल्म एवं टेलीविजन विभाग के निदेशक प्रोफेसर विक्रांत किशोर ने कहा नेपोटिज्म हर क्षेत्र में है। व्यापार में है, राजनीति में है, लेकिन ब०लीवुड को टारगेट किया जा रहा है। नेपोटिज्म को हिंदी में कुनबापरस्ती, भाई–भतीजावाद, कुल–पक्षपात, रिश्तेदारों के साथ मोहब्बत आदि कहा जा सकता है। भारत में नेपोटिज्म को देखें तो जाति व्यवस्था सबसे बड़ा मुद्दा है जिसे नेपोटिज्म से अलग नहीं किया जा सकता है। नेपोटिज्म एक लैटिन शब्द है जिसका अर्थ नेफ्यू या भतीजा है और यह संबंधी और अपने रिश्तेदार को फायदा पहुंचाने से संबंधित है। सम्मानित अतिथि माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय नोएडा केंद्र के पूर्व निदेशक प्रोफेसर बी. एस. निगम ने कहा नेपोटिज्म को फिल्म इंडस्ट्री के संपूर्णता में देखना चाहिए। फिल्म इंडस्ट्री में देखें तो नेपोटिज्म की शुरुआत मोनोपोली से होती है। गौर करें तो वैसे प्रोड्यूसर अब नहीं है जो फिल्म किसी मकसद के साथ प्रोड्यूस करते थे। जब फिल्म इंडस्ट्री ना होकर मकसद था और अब पूर्णतः फिल्म इंडस्ट्री बन गया है। इसमें फाइनेंसिंग बहुत बड़ा फैक्टर है। नेपोटिज्म, मोनोपोली और मनी ने इस क्षेत्र को अचरज भरा बना दिया है। वेबीनार के निदेशक मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार ने संगोष्ठी के उद्देश्यों व रूपरेखा पर चर्चा करते हुए इस अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के सभी अतिथियों का स्वागत व अभिनन्दन किया। अंत में प्रश्नोत्तर सत्र भी हुआ जिसमें वक्ताओं ने प्रतिभागियों के शंकाओं का निवारण किया ।कार्यक्रम का संचालन अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठी के संयोजक डॉ. साकेत रमण ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन समन्वयक सहायक प्रोफेसर डॉ. सुनील दीपक घोड़के ने दिया। मीडिया अध्ययन विभाग की परास्नातक विद्यार्थी पल्लवी सिंह और सनी मिश्रा ने वन्दे मातरम् प्रस्तुत किया। शोधार्थी मौसम जायसवाल ने माननीय कुलपति व प्रो. बी एस निगम का और प्रतीक्षा राम्या ने प्रोफेसर विक्रांत किशोर का संक्षिप्त जीवनवृत्त प्रस्तुत किया। परास्नातक छात्रा सुरभि सिंह ने श्री विवेक अग्निहोत्री के जीवन परिचय एवं उल्लेखित कार्यों का वर्णन किया। अंतरराष्ट्रीय वेबीनार के आयोजन सचिव मीडिया अध्ययन विभाग के सह–प्रोफेसर डॉ. अंजनी कुमार झा, आयोजन सह–सचिव सहायक प्रोफेसर डॉ. परमात्मा कुमार मिश्रा और सह–संया. जक सहायक प्रोफेसर डॉ. उमा यादव थीं। वेबीनार में विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के शिक्षकगण, जनसंपर्क अधिकारी श्रीमती शैफालिका मिश्रा, संगणक अनुभाग अधिकारी श्री दीपक दिनकर समेत अन्य कर्मचारी, शोधार्थी और विद्यार्थी सम्मिलित रहे। इस अंतरराष्ट्रीय कार्यक्रम में देश के 20 राज्यों के प्रतिभागी व मोरैक्को, रशियन फेडरेशन, मलेशिया, नेपाल, आस्ट्रेलिया समेत 11 देशों प्रतिभागी सम्मिलित हुए।

आपदाकाल में पत्रकारिता का राष्ट्र धर्म पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी आयोजित

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के मीडिया अध्ययन विभाग द्वारा 'आपदाकाल में पत्रकारिता का राष्ट्र धर्म' विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन हुआ। इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की अध्यक्षता कर रहे महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रोफेसर संजीव कुमार शर्मा ने सभी वक्ताओं का स्वागत करते हुए अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि आज सबसे बड़ी समस्या जनसंख्या विस्फोट है। पत्रकारिता के माध्यम से इस गंभीर समस्याओं को उठाने का कार्य सर्वोपरि होना चाहिए। जनसंख्या की समस्याओं को जाति, धर्म, पद और कुर्सी की राजनीति से ऊपर उठकर देखने की जररूत हैं। मीडिया को स्वतंत्र भाव से इस मुद्दे को जोर–शोर से राष्ट्रहित में प्रचारित व प्रसारित करने की आवश्यकता है। राष्ट्र का विकास जनसंख्या पर ही निर्भर है लेकिन जनसंख्या का विस्फोट ठीक नहीं है । आज कोरोना संकट ने हमें यह बता दिया कि आपदा का कारण जनसंख्या भी हैं। बतौर मुख्य अतिथि भारतीय जनसंचार संस्थान, दिल्ली के महानिदेशक प्रो. संजय द्विवेदी ने कहा कि भारतीय मीडिया ने हर संकट का चुनौतीपूर्ण सामना किया हैं। आपदा काल में संकटों से जूझने का अभ्यास किसी को नहीं है। इन संकटों में राजनीतिक अवसर भी तलाशे जाते हैं। आज देश की बड़ी आबादी भी एक संकट है। यह पत्रकारिता के लिए दुख की बात है कि आज समाज राजनीतिक आस्थाओं को ही सच मान लिया है। आपदा काल में देश या राज्य की विफलता सिर्फ एक राजनेता की नहीं बल्कि पूरे लोकतंत्र की विफलता है। उत्तर भारत में संकट ज्यादा है, यहां हर आपदा को राजनीतिक अवसर के रूप में देखा जाता है और समाज को इन संकटों से जूझने की आदत हो गई हैं। आजादी के बाद दुख और दर्द कम नहीं हुआ। गांव खाली हो गए और शहर भर गए। राजनीति में जातिवाद भी है, हर जाति का अपना इतिहास रहा है। हर जाति के महापुरुष हुए हैं लेकिन जाति के नाम पर भेदभाव करना सही नहीं है। मीडिया को इन तमाम बातों पर ध्यान देने की जरूरत है। आज माननीय प्रधानमंत्री द्वारा लोकल के लिए वोकल बनने की बात की गई हैं, जो जनहित हेतु एक अच्छा कार्य है। आज जर्नलिस्ट के वेश में एक्टिविस्टों ने प्रवेश कर लिया है। जर्नलिस्ट का काम अलग है और एक्टिविस्ट का काम अलग है, दोनों को गंभीरता से पहचानने की जरूरत है। पत्रकारिता के नाम पर किसी खास विचारधारा के प्रचार को रोकना अत्यंत जरूरी है।

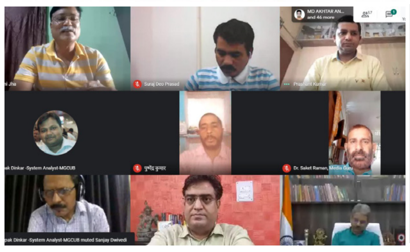

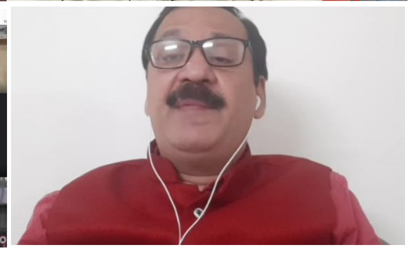

संगोष्ठी में मुख्य वक्ता के तौर पर पांचजन्य, दिल्ली के संपादक हितेश शंकर ने कहा कि भारत के संदर्भ में आपदाकाल को देखें तो कम से कम तीन ऐसे आपदा काल हुए जब पत्रकारिता की अग्निपरीक्षा हुई। पहला – स्वतंत्रता आंदोलन, दूसरा– 1975 का आपातकाल और तीसरा– कोरोनाकाल। अगर हम इतिहास देखें तो राष्ट्र को जगाने वाला और राष्ट्र को एक करने का काम मीडिया का रहा है। जब देश में संकट आया या जब समाज को जगाना हुआ तो पत्रकारिता ही एक सफल माध्यम बना। 1975 के आपातकाल को 1971 से देखना चा. हिए। आपातकाल में मीडिया ने अच्छा कार्य किया। कोरोनाकाल एक अफवाह काल भी है। पहले मीडिया में अगर कुछ गलत प्रकाशित हो जाता था तो उस पर अगले दिन माफी मांगी जाती थी, खेद प्रकट किया जाता था लेकिन अब आदत हो गई है। आज झूठी खबरों का तिरस्कार नहीं हो रहा है। शरारतपूर्ण ढंग से गलत खबरों को भी फैलाई जाती है। कुछ मीडिया ने सीएए को नागरिकता देना नहीं बल्कि नागरिकता लेना बताया। दिल्ली दंगा में अफवाह फैलाया गया। दिल्ली के आनंदविहार में प्रवासी मजदूरों के बीच अफवाह फैलाया गया। आगे उन्होंने कहा कि आज पत्रकारों को जनपथ पर रहने की जरूरत है राजपथ पर घूमने की जरूरत नहीं। इशारा साफ था कि स्वयं स्वार्थ सिद्धि के लिए सत्ता से चिपके रखने की कोशिश ठीक नहीं हैं। मीडिया के छात्रों का मार्गदर्शन करते हुए उन्होंने कहा कि अगर आप पत्रकारिता ग्लैमर और चकाचौंध के चक्कर में कर रहे हैं तो इस क्षेत्र में न आएं।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के मीडिया अध्ययन विभाग के अध्यक्ष सह संगोष्ठी अध्यक्ष डॉ. प्रशांत कुमार ने सभी अतिथियों एवं प्रतिभागियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस महत्वपूर्ण विषय पर चर्चा करना और सभी सम्मानित वक्ताओं को सुनना इस विभाग के लिए सौभाग्य की बात है। मीडिया को जानकारी देते हुए डॉ. कुमार ने बताया कि राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी में 'आपदा काल में पत्रकारिता का राष्ट्रधर्म' विषय के विविध आयामों पर विशेषज्ञों द्वारा गहनता से चर्चा की गई जो मीडिया से जुड़ें शिक्षकों, पत्रकारों, शोधार्थियों एवं विद्यार्थियों के लिए व्यावहारिक दृष्टिकोण से ज्ञानवर्धक रहा। यह राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी गूगल मीट के माध्यम से आयोजित की गई, साथ ही विश्वविद्यालय के फेसबुक पृष्ठ पर भी लाइव किया गया। जिसमें पूरे देश के विभिन्न प्रांतों से सैकड़ों की संख्या में मीडिया एवं अन्यान्य विषयों के छात्र, शोधार्थी एवं पेशेवर प्रतिभागी सक्रिय रूप से सहभागिता किए। अतिथियों के उद्बोधन के बाद प्रतिभागियों के सवालों का जवाब भी वक्ताओं ने दिया।

वेब संगोष्ठी का संचालन मीडिया अध्ययन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. अंजनी कुमार झा ने किया एवं धन्यवाद ज्ञापन मी. डिया अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. उमा यादव ने दिया। मीडिया अध्ययन विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. साकेत रमण इस संगोष्ठी के आयोजन सचिव थे। डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र एवं डॉ. सुनील दीपक घोडके आयोजन समिति में थे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के शोध एवं विकास संकाय के अधिष्ठाता प्रो. राजीव कुमार, शिक्षा संकाय के अधिष्ठाता प्रो. आशीष श्रीवास्तव, गांधी अध्ययन विभाग के सह प्रोफेसर डॉ. असलम खान, डॉ. जुगुल दाधीचि भी सक्रिय रूप में जुड़े रहें। साथ ही पीआरओ शेफालिका मिश्रा व सिस्टम एनालिस्ट दीपक दिनकर ने तकनीकी सहयोग किया। इस संगोष्ठी में अन्य विभागों के प्राध्यापकों सहित शोधार्थी एवं छात्र भी सक्रिय रूप से जुड़े थे।

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

राष्ट्रकवि दिनकर की दृष्टि से गांधी....

राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर (1908–1974)

तू चला, तो लोग कुछ चौंक पड़े, तूफान उठा या आंधी है
ईसा की बोली रूह, अरे! यह तो बेचारा गांधी है.
ली जांच प्रेम ने बहुत, मगर
बापू तू सदा खरा उतरा
शूली पर से भी बार–बार, तू
नूतन ज्योति भरा उतरा
बापू जो हारे, हारेगा
जगतीतल का सौभाग्य–क्षेम
बापू जो हारे, हारेंगे श्रद्धा,
मैत्री विश्वास प्रेम
जल रही आग दुर्गन्ध लिये,
छा रहा चतुर्दिक विकट धूम
विष के मतवाले, कुटिल नाग
निर्भय फण जोड़े रहे घूम
द्वेषों का भीषण तिमिर–व्यूह
पग–पग प्रहरी हैं अविश्वास
है चमू सजी दानवता की
खिलखिला रहा है सर्वनाश
लौटो, छूने दो एक बार फिर
अपना चरण अभयकारी
रोने दो पकड़ वही छाती,
जिसमें हमने गोली मारी.

जो कुछ था देय, दिया तुमने, सब लेकर भी हम हाथ पसारे हुए
खड़े हैं आशा में;
लेकिन, छींटों के आगे जीभ नहीं खुलती,
बेबसी बोलती है आंसू की भाषा में।
वसुधा को सागर से निकाल बाहर लाये,
किरणों का बन्धन काट उन्ह. ॅ उन्मुक्त किया,
आंसुओं–पसीनों से न आग जब बुझ पायी,
बापू! तुमने आख़रि को अपना रक्त दिया।
छिपा दिया है राजनीति ने बापू! तुमको,
लोग समझते यही कि तुम चरख. ा–तकली हो।
नहीं जानते वे, विकास की पीड़ाओं से
वसुधा ने हो विकल तुम्हें उत्पन्न किया था।
एक देश में बांध संकुचित करो न इसको,
गांधी का कर्तव्य–क्षेत्र दिक नहीं, काल है।
गांधी हैं कल्पना जगत के अगले युग की,
गांधी मानवता का अगला उद्वि कास हैं।
बापू! तुमने होम दिया जिसके निमित्त अपने को,
अर्पित सारी भक्ति हमारी उस पवित्र सपने को।
क्षमा, शान्ति, निर्भीक प्रेम को शतशः प्यार हमारा,
उगा गये तुम बीज, सींचने का अधिकार हमारा।
निखिल विश्व के शान्ति–यज्ञ में निर्भय हमीं लगेंगे,
आयेगा आकाश हाथ में, सारी रात जगेंगे।

गांधी प्रेरणा

आई है मिथिला की ब...
बढ़ाने सब का मान,
अहिंसा के पुजारी को
उनके कर्म भूमि से
करती है प्रणाम।

लिया है लोहा गोरों से,
तोड़ी है उनकी शान
बिन लाठी खदेड़ दिए
जो था हिंदुस्तानियों के लिए श्राप।

ना भुला है अंग्रेज,
ना भूले हैं हम
चरखा काट जो लिए आजादी
उस महात्मा की महिमा है अनेक।

महात्मा ने बताई कीमत आजादी की
दिल मस्तिष्क और अपना
सब कुछ सौप दिया
अपने देशवासियों के दो वक्त
की रोटी खातिर,
अंग्रेजों को तोड़ दिया।

धनी है लोग बड़े
जो महात्मा के सानिध्य जिए
साक्षात मूर्त थे भगवान के
महान हुए वह भी जो दर्शन लिए।

जालियांवाला बाग को देखकर
आज भी रूह कांप जाती है
जब होती है बात उन दिनों की,
गांधी जी द्वारा चलाए असहयोग
आंदोलन की याद आती है।

हमने नहीं पूरी दुनिया ने,
गांधी को शांति दूत माना
हमारे बापू ने पूरे जग
को शिक्षा का नया पाठ पढ़ाया

कुमारी दीपा,
मीडिया अध्ययन विभाग

विश्वविद्यालय के चाणक्य परिसर का विहंगम दृश्य
छायाचित्र– सन्नी कुमार मिश्रा,
मीडिया अध्ययन विभाग

महात्मा गांधी सार्द्धशती के उपलक्ष्य में वेब कवि सम्मेलन आयोजित

कविता में लयबद्धता महत्वपूर्ण–प्रो. संजीव कुमार शर्मा

महात्मा गांधी सार्द्धशती के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार द्वारा वेब कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों की काव्य अभिरुचि से सजे इस कवि सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो. संजीव कुमार शर्मा, कुलपति, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. ए. डी. एन. बाजपेयी, पूर्व–कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला एवं सदस्य, महात्मा गांधी 150वीं जयंती समारोह समिति, भारत सरकार थे। तथा विशिष्ट अतिथि एवं आमन्त्रित कवि के रूप में सुप्रसिद्ध कवि प्रो. अशोक बत्रा जी थे। अपने अध्यक्षीय संबोधन में कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि निरन्तर अभ्यास से कविता में निखार आती हैं। यह देखा गया है कि कविता को पढ़ते समय उसके गद्य और पद्य में भेद करना कठिन होता है। छंदमुक्त कविता और पठनीय कविता का भेदभाव पुराना है। कविता में लयतात्मकता महत्वपूर्ण हैं। कविता यदि शीघ्र कंठस्थ हो जाये तो वह बेहतर मानी जाती हैं। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. ए. डी. एन. बाजपेयी ने कहा कि कवि की भाववाचक संज्ञा कविता है। कविता को परिभाषित नहीं किया जा सकता। कवि होना कठिन हैं और यह दुधारी तलवार पर चलने जैसा हैं। कविता को जीना महत्वपूर्ण है और जिन्होंने कविता को जिया वह बेहतर कवि होता है। प्रो. बाजपेयी ने कवि है वही जो सोचता है अकथनीय और अली खेले कल रवि हुआ अरुणोदय के साथ, जैसी कविता सुनाकर कवि सम्मेलन को समां बाधा।

कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि एवं आमन्त्रित सुप्रसिद्ध कवि प्रो. अशोक बत्रा ने कविता के अनेक रूपों की चर्चा की। उन्होंने अपनी कविता है का. ॅमल, लहू की नदी है कविता को सुनाकर जहां कविता के अनेक रूपों को श्रोताओं के सामने रखा था वहीं दूसरी तरफ राजनीति पर चोट करती व्यंग्य कविता जो कभी गण तंत्र था, अब गन तंत्र हो गया को सुना. कर लोगों के सामने राजनी. ति का आईना प्रस्तुत की। प्रो. बत्रा ने प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत कविता की समालोचना भी की और अनेक प्रतिभागियों की रचनाओं को उत्कृष्ट बताया, कार्यक्रम में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं छात्र–छात्राएं प्रतिभागी के रूप में अपनी मौलिक काव्य रचना का पाठ किए। बहुत दूर तक जाना है, मत डरों कोरोना जैसी बीमारी से, सत्य अहिंसा पर केंद्रित कविता, मजदूरों पर केंद्रित, माँ, गांधी, बेटियां, मानवता सहित राष्ट्रीयता से ओत–प्रोत कविता से श्रोता मंत्र मुग्ध हो गए। अतिथियों ने प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत कविता की प्रस्तुति, अंतर्वस्तु और शिल्प की सराहना की। प्रतिभागियों में रश्मि, सुधांशु, राज, पल्लवी, ऋचा, रितेश, आलोक, राहुल, संदीप, सोनाली, मनीष, स्मारिका, कुमार मौसम, विनय, रागिनी, अंचला, दीपा, संकल्प, राजेश, विदुषी प्रमुख थे। शिक्षकों में डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव, डॉ. असलम खान और डॉ. श्याम कुमार झा ने भी अपनी मौलिक कविता का पाठ किए। कवि सम्मेलन के संयोजक डॉ. बिमलेश कुमार, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग एमजीसीयूबी एवं डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र, सहायक आचार्य, मीडिया अध्ययन विभाग ने संयुक्त रूप से कार्यक्रम का संचालन किया।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

गांधीः अहिंसा के पुजारी

महात्मा गांधी का जन्म 2 अक्टूबर 1869 को गुजरात के पोरबंदर में एक कुलीन परिवार में हुआ था। इनका पूरा नाम मोहन दास करमचंद गांधी था। जिन्हें लोग बापू के नाम से भी जानते हैं। गांधी जी का बचपन पोरबंदर में बिता। 13 वर्ष की उम्र में पोरबंदर के एक व्यापारी की पुत्री कस्तूर बाई (कस्तूरबा) से विवाह हुआ। पढ़ाई में औसत रहे गांधीजी बैरिस्टरी (कानून) की शिक्षा प्राप्त करने इंग्लैंड चले गए। पढ़ाई समाप्त होने के पश्चात भारत लौटे,वकालत की शुरुआत मुंबई और राजकोट में की। लेकिन विशेष सफलता नहीं मिली। मई 1893 में एक मुकदमे के सिलसिले में दक्षिण अफ्रीका गए। वहां उन्हें नस्लीय भेदभाव का शिकार होना पड़ा। डरबन से प्रीटोरिया तक रेल यात्रा के दौरान एक गोरे व्यक्ति द्वारा बाहर धकेल दिया गया। इसका गांधीजी पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने 1894 ई. में ”नटाल इंडियन कांग्रेस” की स्थापना की और दक्षिण अफ्रीका में आंदोलन के दौरान कई बार जेल भी गए।

1915 में वतन वापसी

जनवरी,1915 में गांधीजी भारत आए। इनका संपर्क गोपाल कृष्ण गोखले से हुआ। जिन्हें गांधी जी ने अपना राजनीतिक गुरु बनाया। इनके प्रभाव में आकर भारत की सक्रिय राजनीति में शामिल हुए। 1916 ई. में अमदाबाद के निकट साबरमती आश्रम की स्थापना की। सत्याग्रह का पहला सबसे बड़ा प्रयोग 1917 में बिहार के चंपारण जिले में किया। यहां नील के खेतों में काम करने वाले किसानों पर बहुत अत्याचार किया जा रहा था। किसानों को अपनी जमीन के कम से कम 3/20 भाग पर नील की खेती करना आवश्यक था। जो तिनकठिया पद्धति के नाम से जाना जाता है। चंपारण के एक किसान राजकुमार शुक्ल ने लखनऊ में भेंट के दौरान गांधीजी को चंपारण आने का न्योता दिया। चंपारण में गांधीजी के सहयोगी डॉ. राजेंद्र प्रसाद,जेबी कृपलानी,महादेव देसाई,मजहर उल हक नरहरि पारिख एवं बृज किशोर जी थे। सरकार ने पूरे मामले की जांच के लिए एक आयोग गठित किया जिसमें गांधी जी को सदस्य बनाया गया। इस प्रकार चलाया गया पहला सत्याग्रह सफल रहा। रविंद्र नाथ टैगोर ने चंपारण सत्याग्रह के दौरान इन्हें महात्मा की उपाधि दी। इसके बाद गांधी जी ने खेड़ा सत्याग्रह में किसानों का साथ दिया, खिलाफत आन्दोलन,असहयोग आंदोलन, नमक सत्याग. ह आंदोलन का नेतृत्व कर भारतीय मानस में स्वातंत्र्य के लिए प्रेम को प्रबल बनाया। 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस कमेटी की बैठक में गांधी जी के नेतृत्व में भारत छोड़ो आंदोलन का प्रस्ताव पारित किया गया। परंतु अगले ही दिन गांधीजी सहित आंदोलन में शामिल अन्य नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया। गांधी जी ने करो या मरो का नारा दिया। इस आंदोलन ने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इनके अथक प्रयास के फलस्वरूप 15 अगस्त 1947 को देश आजाद हुआ। गांधी जी सत्य और अहिंसा के प्रबल पुजारी थे। जो पूरे विश्व के लिए प्रासंगिक है। इन्होंने हिंदू मुसलमान एकता,छुआछूत उन्मूलन, पिछड़े वर्गों के उन्नति,गांवों के विकास,स्वदेशी वस्तुओं के उपयोग पर विशेष बल दिया। गांधी जयंती (2अक्टूबर) को विश्व आहिंसा दिवस के रूप में मनाया जाता है।

पुष्कर कुमार
मीडिया अध्ययन विभाग

नई शिक्षा नीति –2020 पर वेब संगोष्ठी

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार के शैक्षिक अध्ययन विभाग के तत्वाधान में नई शिक्षा नीति –2020 पर वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया द्य कार्यक्रम की अध्यक्षता विश्वविद्यालय के यशश्वी कुलगुरु आचार्य संजीव कुमार शर्मा ने की। शुभारंभ कार्यक्रम समन्यक डॉ. मुकेश कुमार के अतिथि स्वागत से हुआ। प्रो. आशीष श्रीवास्तव ने विषय की रूपरेखा प्रस्तुत की। प्रति कुलपति प्रोफेसर जी. गोपाल रेड्डी जी ने वर्तमान में छात्रों के लिए मुक्त शिक्षा को बहुत उपयोगी बताया विषय विशेषज्ञ के रूप में प्रो. नागेश्वर राव (कुलपति, इंदिरा गांधी नेशनल ओपन यूनिवर्सिटी, न्यू दिल्ली) ने अपने विचार प्रस्तुत किए। उन्होंने बताया कि गुणवत्ता आधारित तकनीकी शिक्षा की आज बहुत जरूरत है , मुक्त शिक्षा के माध्यम से शिक्षा को घर घर तक पहुंचाया जा सकता है। विशेषज्ञ के रूप में पूर्व कुलपति के. एन. सिंह यादव (उत्तर प्रदेश राजश्री टंडन ओपन यूनिवर्सिटी) ने मुक्त शिक्षा के रास्ते में आ रही समस्याओं के संभावित उत्तर सुझाएं। तीसरे विशेषज्ञ के रूप में कुलपति बी. जी. सिंह (पंडित सुन्दर लाल शर्मा ओपन यूनिवर्सिटी) ने कहा कि देश में बुनियादी स्तर से ही नेशनल ओपन स्कूल को कार्य करने की जररूरत है, उन्होंने नई शिक्षा नीति –2020 में मुक्त शिक्षा को रेगुलर शिक्षा के समान माने जाने की प्रशंसा की अध्यक्षीय उद्‌बोधन में कुलपति आचार्य संजीव कुमार शर्मा ने आनलाइन शिक्षण की उपयोगिता को वर्तमान की जरूरत बताया। उन्होंने कहा कि बदलती परिस्थिति में शिक्षा की प्राथमिकता पुनः तय करने की जरूरत हैद्य कार्यक्रम का संचालन डॉ. मनीषा रानी एवं धन्यवाद ज्ञापन सहायक आचार्य डॉ. पैथलोथ ओमकार ने किया।

किसानों की दशा और दिशा बदलने वाला था गाँधी जी का चंपारण सत्याग्रह

पल्लवी कुमारी, मीडिया अध्ययन विभाग

अहिंसा के पुजारी वो
जुल्मों के खिलाफ आँधी थे
माँ भारती की संतान वो
बापू महात्मा गाँधी थे।

महात्मा यानी महान आत्मा। एक साधारण से असाधारण बनने वाले भारत के सपूत मोहन दास करमचंद गाँधी को रवींद्रनाथ टैगोर ने चंपारण सत्याग्रह के दौरान महात्मा की उपाधि दी। मातृभूमि के लिए अथक प्रयास कर उन्होंने जो मिसाल कायम किए हैं उसको व्याख्यायित करने में बड़े लेखकों के भी शब्द कम पड़ जाए। दक्षिण अफ्रीका में बैरिस्टरी करते हुए अंग्रेजों के विरुद्ध आवाज उठाने वाले भारतीय मोहन दास करमचंद गाँधी ने जब पहली बार खुद पर अंग्रेजों के द्वारा काले–गोरे के बीच होने वाले बर्बरतापूर्ण व्यवहार को झेला। उसी वक़्त उन्होंने ठान लिया की वह इस व्यवस्था को बदलने के लिए आवाज उठाएंगे।

1915 में वह दक्षिण अफ्रीका से हिंदुस्तान लौटे। 1917 में चंपारण के राजकुमार शुक्ल ने लखनऊ जाकर महात्मा गांधी से मुलाकात की और चंपारण के किसानों को इस अन्यायपूर्ण प्रक्रिया से मुक्त कराने के लिए आंदोलन का नेतृत्व करने का अनुरोध किया। गांधी जी ने उनका अनुरोध स्वीकार लिया। अंग्रेज बागान मालिकों के करार के अनुसार किसानों को अपने कृषिजन्य क्षेत्र के 3/20 वें भाग पर नील की खेती करनी होती थी। इसे तिनकठिया पद्ध ति के नाम से जाना जाता था। जबकि अंग्रेज बगान मालिक भूमि को करार से मुक्त करने के लिए भारी लगान की मांग करने लगे। जिससे परेशान हो किसान विद्रोह पर उतर आए। तब उन्हीं के बीच के राजकुमार शुक्ल ने किसानों का नेतृत्व संभाला। अप्रैल 1917 की दोपहर में बिहार के पूर्वी चंपारण के मोतिहारी रेलवे स्टेशन पर इकट्ठे हुए लोगों ने मोहनदास करमचंद गांधी की एक झलक देखी और दिल खोलकर स्वागत किया। उनके आगमन ने न केवल उस इलाके के लोगों के लिए अहम बदलाव को रेखांकित किया, बल्कि भारत के स्वतंत्रता संग्राम को भी नयी धार दी। यह ऐतिहासिक मौका महात्मा गांधी के सत्याग्रह को मूर्त रूप देने का पहला प्रयास था, अहिंसक नागरिक प्रतिरोध के जरिये उन्होंने क्रूर ब्रिटिश हुकूमत और उसके शोषण को खुली चुनौती दी। महात्मा गांधी, राजकुमार शुक्ल के अनुरोध पर चंपारण तो पहुंच गए लेकिन वहाँ कि अंग्रेज प्रशासन ने उन्हें जिला छोड़ने का आदेश जारी कर दिया। गांधी जी ने इस पर सत्याग्रह करने की घोषणा की, जिससे घबराकर प्रशासन ने उनके लिए जारी आदेश वापस ले लिया। चंपारण में सत्याग्रह, भारत में गांधी जी द्वारा सत्याग्रह के प्रयोग की पहली घटना थी। चंपारण आंदोलन में गांधी जी के नेतृत्व में किसानों की एकजुटता को देखते हुए ब्रिटिश सरकार ने जुलाई 1917 में इस मामले की जांच के लिए एक आयोग का गठन किया। गांधी जी को भी इसका सदस्य बनाया गया। आयोग की सलाह मानते हुए सरकार ने तिनकठिया पद्धति को समाप्त घोषित कर दिया। किसानों से वसूले गए धन का भी 25 प्रतिशत वापस कराया गया। महात्मा गांधी के लिए चंपारण आंदोलन का मुख्य केंद्र चंपारण के किसानों की दुर्दशा को दूर करने का था। महात्मा गांधी ने सक्षम वकीलों के साथ चंपारण जिले के लोगों को संगठित किया, उन्होंने जनता को शिक्षित करने में सक्रिय भूमिका निभाई और साथ ही उन्हें आत्मनिर्भर आजीविका के विभिन्न तरीकों को अपनाकर आर्थिक रूप से मजबूत बनना सिखाया। यह आंदोलन न केवल ब्रिटिश हुकूमत द्वारा नील की खेती के फरमान को रद्द करने में सफल साबित हुआ बल्कि महात्मा गांधी के सत्याग्रह वाले असरदार तरीके के साथ भारत के पहले ऐतिहासिक नागरिक अवज्ञा आंदोलन के तौर पर भी सफल साबित हुआ।

वर्तमान में भारतीय किसानों की दुर्दशा ऐसी है कि किसी को फसल नष्ट करना पड़ता है तो कोई तंग आकर खुद को ही नष्ट कर लेता । बिचौलिए भारत की तमाम व्यवस्था में घुन की तरह रचते बसते जा रहे हैं। कहीं किसानों से उनके अनाज आधे दामों पर खरीद लिए जाते हैं तो कहीं उनकी उपजाऊ भूमि को कंपनियों या शहरों की शक्ल में ढाल दिया जाता । किसान चाहें या ना चाहे किसी तरह मजबूर कर उनसे उनकी आत्मा उनकी जमीन को कम दामों में खरीद सारे शहर गाँवों में घुस आए हैं। एक समय था जब गाँधी जी ने इनपर हो रहे अत्याचारों के खिलाफ आवाज उठा इंसाफ दिलवाया । आज हमारे देश की राजनीति का मुद्दा है ”किसान”। भारतीय किसान बस पार्टियों के चुनाव जीतने का एक्का जान पड़ रहा। क्या आज कोई दूसरा गाँधी है जो किसानों को उनके इस दुर्दशापूर्ण हालात से मुक्ति दिला पाए ? शायद बस वो एक गाँधी थे ।

नई शिक्षा नीति में समाज के सभी वर्गों के उत्थान की बात- अतुल कोठारी

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली एवं महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान संकाय के संयुक्त तत्वावधान में शुक्रवार को राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 : समग्र दृष्टि विषय पर वेबिनार का आयोजन किया गया। शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास के सचिव अतुल कोठारी ने अपने संबोधन में मानव संसाधन विकास मंत्रालय का नाम परिवर्तित कर शिक्षा मंत्रालय करने पर प्रसन्नता व्यक्त की। नई शिक्षा नीति में 10+2 (प्लस टू) व्यवस्था की जगह 5+3+3+4 व्यवस्था की चर्चा करते हुए कहा कि बच्चों पर शुरुआत से जितना ध्यान दिया जाना चाहिए उतना ध्यान नहीं दिया जाता था, अब जो व्यवस्था की गयी है उसमें बच्चों का समुचित ध्यान रखने के लिए प्रेरणा मिलेगी। मातृभाषा में शिक्षा दी जाएगी इसकी व्यवस्था की गयी है। उन्होंने कहा कि दुनिया भर में हुए तमाम अध्ययनों से पता चलता है कि शुरुआती 8 साल तक बच्चा 70 से 80 प्रतिशत तक चीजें सीखता है। नई नीति में 6वीं कक्षा से वोकेशनल शिक्षा शुरु हो जाएगी। गांधी जी ने भी इस ओर ध्यान दिया था। 9वीं से अप्रेंटिसशिप की व्यवस्था शुरु की जाएगी। विद्यार्थियों को अब विषय चुनने की आजादी रहेगी। वे साईंस के साथ संगीत और मनोविज्ञान के साथ फिजिकल साईंस भी पढ़ सकेंगे। उच्च शिक्षा में भी विद्यार्थियों को काफी स्वतंत्रता मिल रही है। स्नातक स्तर पर एक साल में सर्टिफिकेट, दो साल में डिप्लोमा और तीन साल में डिग्री मिलेगी। विद्यार्थी आगे शोध स्तर की पढ़ाई करना चाहे तो 4 साल की पढ़ाई करनी पड़ेगी। अगर पीजी करना चाहता है तो एक साल और पढ़ना होगा। नई नीति में सभी विश्वविद्यालयों को समान स्तर पर लाया जाएगा, कोई भेदभाव नहीं रहेगा। भारतीय ज्ञान परंपरा को आगे बढ़ाने की बात की गयी है। प्राचीन पांडुलिपियां लाखों की संख्या में बिखरी पड़ी हैं, इनके संकलन और संरक्षण की बात कही गयी है। नई शिक्षा नीति तो बहुत अच्छी है, लेकिन मूल बात इसके क्रियान्वयन की है। प्रत्येक स्तर पर इसके क्रियान्वयन के लिए समर्पित होना होगा। यह केंद्र के साथ-साथ राज्यों का भी काम है, दोनों को मिलकर काम करना होगा।

कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि कोठारी जी देश के विभिन्न राज्यों से जुड़े शिक्षण संस्थानों में लगातार संवाद करते हैं। इन्होंने स्वयं को शिक्षा के प्रति समर्पित कर रखा है। हम लोग उनके कार्यक्रमों से जुड़े रहते हैं। श्री कोठारी स्वयं इस शिक्षा नीति से सैद्धांतिक रुप से संबंद्ध हैं। प्रो. शर्मा ने बताया कि केविवि में अब तक नई शिक्षा नीति पर 8 बड़े कार्यक्रम हुए हैं और इनमें 40 विश्वविद्यालयों के कुलपति और जाने-माने शिक्षाविदों को हम जोड़ पाए हैं। क्रियान्वयन के स्तर पर समिति बनाई गई है। हम इसमें विद्यार्थियों को भी शामिल करते हुए आगे बढ़ रहे हैं। प्रो. पवनेश कुमार ने इस वेबिनार में उपस्थित विवि के कुलपति, तमाम राज्यों से जुड़े शिक्षकों, विद्यार्थियों, शिक्षाविदों एवं विवि परिवार के सदस्यों का भी आभार जताया। इस वेबिनार में सह-संयोजक, प्रो.त्रिलोचन शर्मा, डॉ. अल्का सिंह व डॉ. आशीष रंजन समेत प्रो. राजीव कुमार, डॉ. नरेंद्र सिंह, डॉ. राजेंद्र सिंह, डॉ. सपना सुगंधा, डॉ. शिरिष मिश्रा, कमलेश कुमार एवं कई राज्यों के शिक्षक, विद्यार्थी, शिक्षाविद, विवि के सिस्टम एनालिस्ट दीपक दीनकर, पीआरओ शेफालिका मिश्रा, एवं केविवि के अन्य शिक्षक, अधिकारी व विद्यार्थी उपस्थित रहे। राष्ट्रगान के उपरांत कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आत्मनिर्भर भारत के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 पर संगोष्ठी

आत्म निर्भर बनाने में मील का पत्थर साबित होगी नई शिक्षा नीति–जे पी सिंघल

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्व. विद्यालय और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को एक राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। आत्मनिर्भर भारत के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि' विषय पर आयोजित इस वेब संगोष्ठी के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जे पी सिंघल रहे। उच्च शिक्षा संवर्ग, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. प्रगनेश शाह बतौर विशिष्ट अतिथि मौजदू रहे। विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की अध्यक्षता की। केविवि के वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. पवनेश कुमार ने संगोष्ठी के संयोजक के दायित्व का निर्वहन किया। बतौर मुख्य वक्ता प्रो. जे पी सिंघल ने अपने वक्तव्य में कहा कि आत्म निर्भर भारत से तात्पर्य है कि भारत पूरी तरह से अपने पैरों पर खड़ा होने वाला देश बने। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक वक्तव्य का जिक्र करते हुए प्रो. सिंघल ने कहा कि अगर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का हम सफल क्रियान्वयन कर सकें तो निश्चित तौर से यह भारत को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से आत्म निर्भर बनाने में मील का पत्थर साबित होगा। जब हम ऐसे भारत की कल्पना करते हैं, संकल्प लेते हैं जो पूरी तरह से अपने आप पर निर्भर हो तो हमें अपने पूर्व राष्ट्रपति एपीजे अब्दुल कलाम जी याद आते हैं जिन्होंने कहा था कि हमारी अर्थव्यवस्था ज्ञान आधारित होनी चाहिए और इस ज्ञान आधारित अर्थव्यवस्था में ज्ञान आधारित समाज की रचना करनी है।

विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रगनेश शाह ने अपने वक्तव्य में भारत में ब्रिटिश शासन से पहले की शिक्षा व्यवस्था और ब्रिटिशकाल से अब तक चली आ रही शिक्षा व्यवस्था का जिक्र करते हुए दुनिया में शोध के क्षेत्र में भारत की स्थिति को कमजोर बताया। प्रो. शाह ने आगे कहा कि भारत सरकार ने 29 जुलाई 2020 को जो नई शिक्षा नीति स्वीकार की और उसे अमल में लाने की शुरुआत कर दी है इसमें कहा गया है कि अब जो छात्र स्नातक होंगे वे कौशलपूर्ण होंगे, उनमें कोई ना कोई हुनर होगा, वे कुछ कर पाने में सक्षम होंगे।

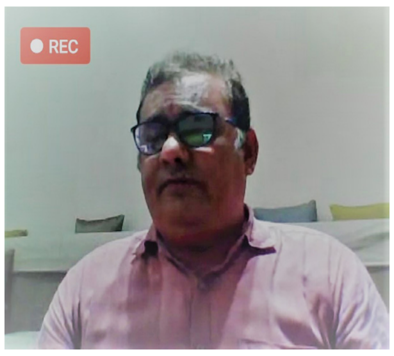

नई शिक्षा नीति के तहत आगे के विद्यार्थियों में मूल्य आधारित जीवन जीने की एक क्षमता होगी और वे एक जिम्मेदार और प्रतिबद्ध नागरिक होंगे। ये छात्र सतत विकास की बात सोचने वाले और सिर्फ नौकरी के लिए वे पैदा हुए हैं यह सोच छोड़कर कुछ नया करें, कुछ नया सोचें, उनमें आत्म विश्वास हो इस तरह की ये शिक्षा नीति होगी। कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में नई शिक्षा नीति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि हमारे विद्यार्थियों के मौलिक चिंतन के द्वार अंग्रेजी सीखने के नाम पर बंद थे, कुंद थे उन्हें खोलने के स्पष्ट प्रयास नई शिक्षा नीति में किये गये हैं। इसमें शिक्षकों को भी स्वतंत्रता है। अगर किसी शिक्षक के पास कोई विशिष्ट प्रतिभा है, विशिष्ट कौशल है या विशिष्ट विशेषज्ञता है तो नई शिक्षा नीति उसे प्रकटीकरण का अवसर प्रदान करती है। इससे पूर्व कार्यक्रम के शुरुआत में प्रो. पवनेश कुमार ने केविवि और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के साथ-साथ सभी वक्ताओं एवं अतिथियों का परिचय दिया और विषय प्रवर्तन किया। प्रबंधन विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. अल्का लल्हाल ने सभी वक्ताओं और संगोष्ठी में सहभागिता कर रहे शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं विशिष्ट जनों का स्वागत किया।

खबरों में विश्वविद्यालय.....

केविवि • 'आत्मनिर्भर भारत के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि' विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी संपन्न

भारत को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से आत्मनिर्भर बनाने में मील का पत्थर साबित होगी राष्ट्रीय शिक्षा नीति : प्रो. जेपी सिंघल

सिटी रिपोर्टर | मोतिहारी

महात्मा गांधी केंद्रीय विवि और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी हुई। 'आत्मनिर्भर भारत के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि' विषय पर आयोजित संगोष्ठी के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जेपी सिंघल थे।

उच्च शिक्षा संवर्ग, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. प्रगनेश शाह बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद थे। इसकी अध्यक्षता विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने की। केविवि के वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. पवनेश कुमार ने संगोष्ठी के संयोजक के दायित्व का निर्वहन किया। बतौर मुख्य वक्ता प्रो. जेपी सिंघल ने कहा कि आत्म निर्भर भारत से तात्पर्य है कि भारत पूरी तरह से अपने पैरों पर खड़ा होने वाला देश बने। प्रो. सिंघल ने कहा कि अगर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का हम सफल क्रियान्वयन कर सकें तो निश्चित तौर से यह भारत को आर्थिक और सामाजिक दृष्टि से आत्म निर्भर बनाने में मील का पत्थर साबित होगा।

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय मोतिहारी।

'छात्रों के मौलिक चिंतन के द्वार अंग्रेजी सीखने के नाम पर बंद थे'

कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि हमारे विद्यार्थियों के मौलिक चिंतन के द्वार अंग्रेजी सीखने के नाम पर बंद थे, कुंद थे। उन्हें खोलने का स्पष्ट प्रयास नई शिक्षा नीति में किया गया है। इसमें शिक्षकों को भी स्वतंत्रता है। अगर किसी शिक्षक के पास कोई विशिष्ट प्रतिभा है, विशिष्ट कौशल है या विशिष्ट विशेषज्ञता है तो नई शिक्षा नीति उसे प्रकटीकरण का अवसर प्रदान करती है। मौके पर प्रो. पवनेश कुमार, सहायक प्रोफेसर डॉ. अल्का ललहाल, प्रो. सुधीर कुमार साहू, डॉ. सपना सुगंधा, डॉ. दिनेश व्यास, कमलेश कुमार, पीआरओ शेफालिका मिश्रा, सिस्टम एनालिस्ट दीपक दिनकर समेत बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं देश के कई राज्यों से शिक्षाविद ऑनलाइन उपस्थित रहे।

दैनिक भास्कर, 16 सितम्बर 2020

प्रभात खबर,16 सितम्बर,2020

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी

नयी शिक्षा नीति से प्रतिभा की होगी पहचान, मिलेगा अवसर

- केविवि और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन

प्रतिनिधि, मोतिहारी

महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को एक राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया. 'आत्मनिर्भर भारत के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि' विषय पर आयोजित इस वेब संगोष्ठी के मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के अध्यक्ष प्रो. जेपी सिंघल रहे. उच्च शिक्षा संवर्ग, अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष प्रो. प्रगनेश शाह बतौर विशिष्ट अतिथि मौजूद रहे. विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव ... अध्यक्षता की. केविवि के वाणिज्य एवं प्रबंधन विज्ञान संकाय के अधिष्ठाता प्रो. पवनेश कुमार ने संगोष्ठी के संयोजक के दायित्व का निर्वहन किया. बतौर मुख्य वक्ता प्रो. जे पी सिंघल ने कहा कि आत्म निर्भर भारत से तात्पर्य है कि भारत पूरी तरह से अपने पैरों पर खड़ा होने वाला देश बने. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के एक वक्तव्य का जिक्र करते हुए प्रो. सिंघल ने कहा कि अगर राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 का हम सफल क्रियान्वयन कर सकें तो निश्चित तौर से यह भारत को आर्थिक ... बनाने में मील का पत्थर साबित होगा. विशिष्ट अतिथि प्रो. प्रगनेश शाह ने भारत में ब्रिटिश शासन से पहले की शिक्षा व्यवस्था और ब्रिटिशकाल से अब तक चली आ रही शिक्षा व्यवस्था का जिक्र करते हुए दुनिया में शोध के क्षेत्र में भारत की स्थिति को कमजोर बताया. केविवि कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने अपने अध्यक्षीय संबोधन में नई शिक्षा नीति के बारे में विस्तारपूर्वक चर्चा करते हुए कहा कि हमारे विद्यार्थी के मौलिक चिंतन के द्वार अंग्रेजी सीखने के नाम पर ... प्रयास नई शिक्षा नीति में किये गये हैं.इसमें शिक्षकों को भी स्वतंत्रता है. अगर किसी शिक्षक के पास कोई विशिष्ट प्रतिभा है. विशिष्ट कौशल है या विशिष्ट विशेषज्ञता है तो नई शिक्षा नीति उसे प्रकटीकरण का अवसर प्रदान करती है. इससे पूर्व कार्यक्रम के शुरुआत में प्रो. पवनेश कुमार ने केविवि और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के साथ-साथ सभी वक्ताओं एवं अतिथियों का परिचय दिया और विषय प्रवर्तन किया. प्रबंधन विज्ञान विभाग की सहायक प्रोफेसर डॉ. अल्का लल्हाल ने सभी वक्ताओं और संगोष्ठी में सहभागिता कर रहे शिक्षकों, शोधार्थियों, विद्यार्थियों एवं विशिष्ट जनों का स्वागत किया. केविवि के प्रो. सुधीर कुमार साहू, डॉ. सपना सुगंधा, डॉ. दिनेश व्यास, कमलेश कुमार, पीआरओ शेफालिका मिश्रा, सिस्टम एनालिस्ट दीपक दीनकर समेत बड़ी संख्या में शिक्षक, शोधार्थी, विद्यार्थी एवं देश के कई राज्यों से शिक्षाविद ऑनलाइन ...

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का हुआ आयोजन

मोतिहारी,पू.च.। महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय और अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के संयुक्त तत्वावधान में सोमवार को एक राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। ...

समाज की रचना करनी है। अगर किसी शिक्षक के पास कोई विशिष्ट प्रतिभा है, विशिष्ट कौशल है या विशिष्ट विशेषज्ञता है तो नई शिक्षा नीति उसे प्रकटीकरण का अवसर प्रदान करती है। ...

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की दृष्टि विषय पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का हुआ आयोजन

मोतिहारी, पू.च.। महात्मा गाँधी ... इस राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी की अध्यक्षता ... होगा। जब हम ऐसे भारत की ... अखिल भारतीय राष्ट्रीय शैक्षिक ...

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

नई शिक्षा नीति में संस्कृत का पुनर्प्रबन्धन कर बहुआयामी बनाने की आवश्यकता है : प्रो. श्रीनिवास बरखेडी

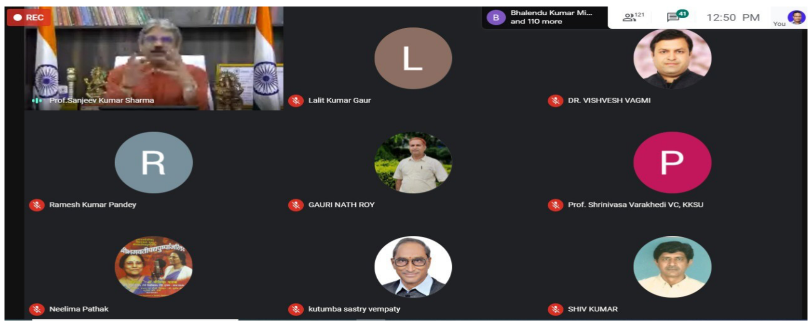

महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय,बिहार के संस्कृत विभाग द्वारा नूतनराष्ट्रियशिक्षानीतौ संस्कृतम् : सम्भाव्यता कार्ययोजना च विषयक अन्तर्जालीय एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का शुभारम्भ किया गया। इस एक दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी की अध्यक्षता राजनीति विज्ञान के आचार्य व संस्कृत के अनुरागी विद्वान् महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के यशस्वी कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने किया। इस अन्तर्जालीय एकदिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के मुख्य वक्ता प्रो. श्रीनिवास बरखेडी,कुलपति, कविकुलगुरुकालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय,रामटेक,नागपुर, महाराष्ट्र, प्रो. रमेश कुमार पाण्डेय,कुलपति श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय, नई दिल्ली, प्रो.राजाराम शुक्ल, कुलपति सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी तथा प्रो.श्रेयांश द्विवेदी,कुलपति महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय,कैथल, हरियाणा ने अपना मत प्रस्तुत किया। इनके अतिरिक्त प्रो. कुटुम्ब शास्त्री,पूर्वकुलपति,राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान,नई दिल्ली, सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय,वाराणसी एवं श्री सोमनाथ संस्कृत विश्वविद्यालय,गुजरात तथा प्रो.पीयूष कान्त दीक्षित, भूतपूर्व कुलपति उत्तराखण्ड संस्कृत विश्वविद्यालय,हरिद्वार, आदि अनेकों कुलपतियों एवं संस्कृत के अखिल भारतीय स्तर के प्रतिष्ठित विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति में नूतन शिक्षा नीति में संस्कृत की कार्य योजना के विविध बिन्दुओं पर सार्थक चर्चा हुई। इस संगोष्ठी के प्रथम वक्ता के रूप में प्रो.श्रेयांश द्विवेदी ने नई शिक्षा नीति में संस्कृत की कार्ययोजना पर अपना बहुमूल्य उद्बोधन दिया। प्रो.द्विवेदी ने अपने व्याख्यान में विविध क्षेत्रों में संस्कृत की अनिवार्यता एवं सम्भावनाओं को प्रस्तुत किया। अपने उद्बोधन में प्रो. द्विवेदी ने कहा कि त्रिभाषा संरचना में संस्कृत को अनिवार्य रूप से वरीयता देनी चाहिए जिससे विद्यार्थियों का प्रारम्भिक स्तर से ही संस्कृत पढने में अभिरुचि जागृत हो सके। अपने व्याख्यान में प्रो. द्विवेदी ने कहा कि यदि भारत को परम वैभवशाली बनाना है और देश को विश्व में स्थापित करना है तो निश्चित रूप से देश की शिक्षा व्यवस्था को संस्कृत से किसी न किसी रूप में जोडना होगा। द्वितीय वक्ता के रूप में प्रो.राजाराम शुक्ल ने नूतन शिक्षा नीति में संस्कृत की सम्भावना पर अपना उपयोगी एवं प्रासंगिक उद्बोधन दिया। प्रो. शुक्ल ने इस नई शिक्षा नीति को संस्कृत के लिए अत्यन्त ही लाभप्रद बताते हुए कहा कि इस नई शिक्षा नीति का प्रारूप पूर्णतः भारतीय ज्ञान परम्परा एवं संस्कृति के अनुकूल है जिसे भारतीय शिक्षा नीति 2020 कहना अत्यधिक युक्तियुक्त होगा।

सारस्वत अतिथि के रूप में प्रो. श्रीनिवास बरखेडी ने संस्कृत को बहु-आयामी बनाने हेतु उसके पुनर्प्रबन्धन पर प्रकाश डालते हुए संस्कृत के सिद्धान्तों को संस्कृतेतर विषयों के सिद्धान्तों के अनुरुप प्रस्तुतिकरण की प्रक्रिया पर बल दिया जिससे संस्कृत अन्य विषयों के लिए उपजीव्य के रूप में सिद्ध हो सके। प्रो. बरखेडी ने अपने व्याख्यान में कहा कि नई शिक्षा नीति के कार्यान्वयन में संस्कृत के विद्वानों की जिम्मेदारी अत्यधिक है। संस्कृत के विद्वानों को संस्कृत के शास्त्रीय सिद्धान्तों को अन्य विषयों के सिद्धान्तों के अनुरुप पुनर्प्रबन्धन करना होगा तथा संस्कृत को अन्य विषयों से जोडने के लिए उनके पाठ्यक्रम के अनुरुप संस्कृत के पाठ्यक्रम का निर्माण करना होगा। इसके लिए संस्कृत के विद्वानों को पाठ्यक्रम संवेदी (कंटेंट सेंसिटिव) होना पडेगा। अध्यक्षीय उद्बोधन में महात्मा गाँधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि संस्कृत का मानकीकरण के साथ सरलीकरण इस रूप में हो जिससे संस्कृतेतर विद्यार्थी भी संस्कृत के ज्ञेय तत्त्वों का ज्ञान अपनी पृष्ठभूमि के अनुरुप कर सके। प्रो. शर्मा ने संस्कृत की महत्ता एवं वैज्ञानिकता को प्रतिपादित करते हुए संस्कृत युगानुकूल एवं देशानुकूल बनाने के लिए शिक्षाविदों को कार्ययोजना के निर्माण पर चिन्तन करने हेतु प्रेरित किया। अतिथियों, विद्वज्जनों एवं प्रतिभागिया. का स्वागत संस्कृत विभ. ाग के विभागाध्यक्ष प्रो. प्रसून दत्त सिंह ने किया। इस संगोष्ठी का मंगलाचरण, संचालन एवं विषय प्रवर्तन संस्कृत विभाग के सहायक आ. चार्य डॉ. विश्वेश वाग्मी ने किया।

नई शिक्षा नीति शिक्षा के लिए सर्जिकल स्ट्राइक हैः श्री निवास

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ः प्रासंगिकता एवं कार्यान्वयन पर राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी आयोजित

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के वाणिज्य विभाग द्वारा राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020ः प्रासंगिकता एवं कार्यान्वयन विषयक एक दिवसीय राष्ट्रीय वेब संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसकी अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने सभी विद्वान अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि शिक्षा नीति की प्रशंसा का समय अब खत्म हो चुका हैं। अब हमें उसके क्रियान्वयन प्रक्रिया पर जोर देना है। विश्वविद्यालय स्तर पर क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों से सुझाव मांगा गया है। सुझाव आते ही इसके क्रियान्वयन की दिशा में आगे कदम बढ़ाएंगे। नई शिक्षा हमारे पुनः विश्व गुरु बनने की दिशा में मिल का पत्थर साबित होगा और विश्व को रास्ता दिखाएगा, ऐसा मेरा मानना हैं।

मुख्य वक्ता के तौर पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय सह संगठन मंत्री श्रीनिवास ने नई शिक्षा नीति पर चर्चा करते हुए कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति में शिक्षा जगत के सभी घटकों को समाहित किया गया है। इस शिक्षा नीति द्वारा व्यक्ति के जीवन में व्यक्तित्व के निर्माण के साथ ही साथ राष्ट्र का भी निर्माण होगा। 185 वर्ष बाद भारत को भारत की शिक्षा देने का काम किया गया है। जिस दिन यह शिक्षा नीति जमीन पर उतरेगी, उस दिन से समाज एवं राष्ट्र में व्यापक सकारात्मक परिवर्तन देखने को मिलेगा। वास्तविक इतिहास को देखेंगे तो षड्यंत्र के तहत भारत की गौरशाली इतिहास एवं कार्य पद्धति को समाप्त करने की कोशिश की गई । बाबा साहब भीमराव अंबेडकर ने कहा कि प्रत्येक बच्चे को अधिकार मिलना चाहिए कि वह अपने पसंद का विषय पढ़ सके। आजादी के 70 वर्षों तक जो काम नहीं हुआ था वह अब हुआ है। यह शिक्षा के क्षेत्र में सर्जिकल स्ट्राइक है। जिस देश के शिक्षक शास्त्र और शस्त्र उठाने की क्षमता रखते हैं उस देश की संस्कृति बची रहती है। बतौर विशिष्ट अतिथि जेएनयू के प्रो.मजहर आसिफ, सदस्य ड्राफ्टिंग समिति, राष्ट्रीय शिक्षा नीति ने कहा कि नीति के साथ नियत की भी जरूरत है। आजाद हिंदुस्तान के तारीख में पहली शिक्षा नीति बनाई गई है जो शिक्षक और छात्रों पर केंद्रित है। जिस इलाके में जो छात्र रहता है वहां की भाषा सीखना जरुरी है।यह शिक्षा नीति सरकारी और गैर सरकारों के बीच की दूरी को पाटने का काम करेगा। मातृभाषा में शिक्षा देने की आवश्यकता है।

मुख्य अतिथि प्रो.नागेश ठाकुर, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय एवं सदस्य, यूजीसी ने अपने वक्तव्य में बताया कि किसी भी राष्ट्र के उन्नति के लिए राष्ट्र के शिक्षा व्यवस्था का अहम योगदान होता है। मैकाले की शिक्षा नीति गुलाम बनाने की कोशिश थी। 29 जुलाई 2020 भारत के इतिहास में स्वर्णिम दिन के रूप में जाना जाएगा। आजादी के इतिहास में यह पहली शिक्षा पद्धति है। जहां विद्यार्थी अपनी इच्छा के अनुसार पढ़ सकेगें। दुनिया में वही देश विकास के पायदान पर आगे हैं, जहां शोध एवं विकास पर बल दिया जाता हैं। स्वागत अध्यक्ष के रूप में विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति प्रो. जी गोपाल रेड्डी ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और कहा कि यह नीति मील का पत्थर साबित होगा। शिक्षा नीति को लागू कराने में शिक्षकों का अहम भूमिका रहेगा। अतिथियों का स्वागत वेब संगोष्ठी के संयोजक एवं वाणिज्य विभाग के अध्यक्ष प्रो. त्रिलोचन शर्मा ने किया। कार्यक्रम का संचालन संगोष्ठी के समन्वयक डॉ. शिवेंद्र सिंह सहायक आचार्य, वाणिज्य विभाग और धन्यवाद ज्ञापन हिंदी विभाग के सह आचार्य अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने किया। कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. अंजनी कुमार झा, सह-आचार्य मीडिया अध्ययन विभाग एवं डॉ. शिरीष मिश्रा, सह-आचार्य, वाणिज्य विभाग की भी महत्वपूर्ण भूमिका थी।

खबरों में विश्वविद्यालय.....

महात्मा गांधी सार्द्धशती के उपलक्ष्य में 10 सितम्बर को वेब कवि सम्मेलन

मोतिहारी,पू.च.। महात्मा गांधी सार्द्धशती के उपलक्ष्य में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, बिहार द्वारा 10 सितम्बर, 2020 को सायं 06 बजे से वेब कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया है। विश्वविद्यालय के शिक्षकों एवं छात्रों की काव्य अभिरुचि से सजे इस कवि सम्मेलन की अध्यक्षता प्रो. संजीव कुमार शर्मा, कुलपति, महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी, करेंगे। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्रो. ए. डी. एन. बाजपेयी, पूर्व-कुलपति, हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय, शिमला एवं सदस्य, महात्मा गांधी 150वीं जयंती समारोह समिति, भारत सरकार है। विशिष्ट अतिथि एवं आमन्त्रित कवि के रूप में सुप्रसिद्ध कवि प्रो. अशोक बत्रा कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएंगे। प्रो. बत्रा राष्ट्रीय महामंत्री, राष्ट्रीय कवि संगम एवं पूर्व-प्राचार्य (सेवानिवृत) एल. एन. हिन्दू कॉलेज, रोहतक है।कवि सम्मेलन का आयोजन छात्र कल्याण अधिष्ठाता प्रो. आनंद प्रकाश अध्यक्ष, महात्मा गांधी सार्द्धशती समारोह समिति और प्रबंध एवं वाणिज्य संकाय के अधिष्ठाता प्रो. पवनेश कुमार सचिव, महात्मा गांधी सार्द्धशती समारोह समिति के निर्देशन में कार्यक्रम सम्पन्न होगा। कवि सम्मेलन के संयोजक डॉ. बिमलेश कुमार, विभागाध्यक्ष, अंग्रेजी विभाग एमजीसीयूबी ने बताया कि कार्यक्रम में महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के शिक्षक एवं छात्र-छात्राएं प्रतिभागी के रूप में अपनी मौलिक काव्य रचना का पाठ करेंगे। प्रतिभागियों से पूर्व में ही कविता आमन्त्रित की गई थी। जिसमें लगभग चार दर्जन मौलिक कविता प्रतिभागिता के लिए आयोजन समिति के पास आई। उसमें से जज के एक पैनल द्वारा उनके प्रस्तुति, अंतर्वस्तु और शिल्प के आधार पर 22 छात्र-छात्राओं को कविता प्रस्तुति के लिए चुना गया है। कार्यक्रम के सह-संयोजक डॉ. अंजनी कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि कवि सम्मेलन में उक्त 22 प्रतिभागियों के अतिरिक्त आमंत्रित सुप्रसिद्ध कवि प्रो. अशोक बत्रा एवं विश्वविद्यालय के कुछ शिक्षकों का कविता पाठ होना है। आयोजन समिति के सदस्य डॉ. अभय विक्रम सिंह, सहायक आचार्य , गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग और डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र, सहायक आचार्य, मीडिया अध्ययन विभाग ने बताया कि कार्यक्रम से विश्वविद्यालय के शिक्षक, अधिकारी, शोधार्थी एवं विद्यार्थी के साथ देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं साहित्यिक अभिरुचि के हजारों लोग जुड़ेंगे। कार्यक्रम गूगल मीट पर आयोजित है, जिससे जुड़ने के लिए लिंक प्रेषित किया गया है। कार्यक्रम संबंधी अन्य तैयारियां की जा रहीं है।

प्रभात खबर,01 सितम्बर, 2020

भारतीय परंपरा के संवाहक थे महात्मा गांधी : कुलपति

- केविवि में 'गांधी कल, आज और कल' विषय पर ऑनलाइन विचार गोष्ठी

प्रतिनिधि ▷ मोतिहारी

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के महात्मा गांधी सार्धशती समारोह समिति व गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग द्वारा रविवार को एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया. 'गांधी कल, आज और कल' विषय पर आयोजित इस विचार गोष्ठी की अध्यक्षता कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने की.

मुख्य अतिथि एवं मुख्य वक्ता गांधी अध्ययन विद्यापीठ, महात्मा गांधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी थे. गांधी अध्ययन संकाय, गुजरात विद्यापीठ, अहमदाबाद के प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा एवं गांधी एवं शांति अध्ययन विद्यापीठ, महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के विभागाध्यक्ष डॉ मनोज कुमार राय विशिष्ट अतिथि मौजूद थे. मुख्य वक्ता प्रो. रामप्रकाश द्विवेदी ने कहा कि 19वीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध ऐसा लगता है कि भारत के महापुरुषों के अवतरण का काल है.

बाल गंगाधर तिलक सन 1856 में पैदा हुए, पं. मदन मोहन मालवीय 1861 में, गांधी जी के राजनीतिक गुरु गोपालकृष्ण गोखले 1866 में, महात्मा गांधी 1869 में और भीमराव आंबेडकर 1891 में पैदा हुए. गांधी जी का समग्र जीवन मानवीय शास्वत मूल्यों के पोषण, उसकी घोषणा करने, उसका प्रयोग करने एवं मानवता का पाठ सीखाने में रहा है. शास्वत मूल्य कभी समाप्त नहीं होते. प्रो. प्रेम आनंद मिश्रा ने कहा कि गांधी का जो चित्रण है, स्वतंत्रता आंदोलन में जो उनकी भूमिका है, उसे नकारा नहीं जा सकता है. गांधी जी सिर्फ एक इतिहास नहीं है गांधी जी के जो विचार हैं. वह वर्तमान और भविष्य के लिए भी है. प्रो. मनोज कुमार राय ने अपने संबोधन में कहा कि गांधीजी की यह खासियत रही कि वे अपनी प्राचीन परंपरा से बड़े सधे तरीके से काम की चीज निकालते हैं और उसे समाज के सामने रखते हैं. प्रो. संजीव कुमार शर्मा ने कहा कि गांधी भारतीय परंपरा के संवाहक हैं. इससे पूर्व वेबिनार के संयोजक एवं सचिव, महात्मा गांधी सार्धशती समारोह समिति प्रो. पवनेश कुमार एवं प्रो. आनंद प्रकाश, अध्यक्ष, महात्मा गांधी सार्धशती समारोह समिति एवं अधिष्ठाता छात्र कल्याण ने अपने-अपने विचार रखते हुए अतिथियों का स्वागत किया. कार्यक्रम का संचालन गांधी एवं शांति अध्ययन विभाग के सहायक प्रोफेसर डॉ अभय विक्रम सिंह ने किया. इस अवसर पर प्रो. सुधीर कुमार साहू, प्रो. त्रिलोचन शर्मा, डॉ दिनेश व्यास, डॉ पाथलोथ ओंकार, कमलेश कुमार, पीआरओ शेफालिका मिश्रा, सिस्टम एनालिस्ट दीपक दिनकर उपस्थित थे.

150 YEARS OF CELEBRATING THE MAHATMA

परिसर प्रतिबिंब

अक्टूबर, 2020

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी

उच्च शिक्षा के क्षेत्र में देश के मानचित्र पर विशिष्ट पहचान के साथ दिखेगा हमारा विश्वविद्यालयः कुलपति

महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय, मोतिहारी लगातार प्रगति के पथ पर अग्रसर है। इससे विश्वविद्यालय की सकारात्मक छवि बनी है। जल्द ही यह विश्वविद्यालय उच्च शिक्षा के क्षेत्र में देश के मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान के साथ दिखने लगेगा। इस काम में विश्वविद्यालय प्रशासन के साथ–साथ यहां के शिक्षक व विद्यार्थी भी लगे हुए हैं। उक्त बातें महात्मा गांधी केंद्रीय विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. संजीव कुमार शर्मा ने कही। उन्होंने बताया कि शिक्षा मंत्रालय की रैंकिंग के अनुसार विश्वविद्यालय देश भर में 23वें स्थान पर हैं।

28 एकड़ जमीन पर विवि की दीवार खड़ी करना प्राथमिकता :– प्रो. शर्मा ने बताया कि कम संसाधन में बेहतर की कोशिश कर रहे हैं। विश्वविद्यालय को 134 एकड़ जमीन मिली थी। इसमें चार एकड़ का मामला कोर्ट में चला गया है। ऐसे में हम 28 एकड़ जमीन पर ही काम कर रहे हैं। इस जमीन पर विवि की दीवार खड़ी करनी है। इसके लिए प्रक्रिया चल रही है। हमारे यहां 20 विभागों के लिए 123 नियमित शिक्षक जिनमें 24 प्रोफेसर सेवा दे रहे हैं। 12 प्रतिशत रिक्तियां शेष बच गयी हैं। पिछले डेढ़ साल में हम 40वें से 23वें नंबर पर पहुंच गए हैं। फिलहाल 65 कोर्सेस संचालित हो रहे हैं।

लॉकडाउन में 2100 से अधिक ऑनलाइन कक्षाएं

उन्होंने कहा कि बहुत कम समय में एमजीसीयूबी ने देश भर में अलग पहचान बनायी है। पहले के कई केविवि विभिन्न मामलों में हमसे काफी पीछे हैं। खासकर लॉकडाउन अवधि में हमने करीब 2100 ऑनलाइन कक्षाएं संचालित करायीं। विभिन्न विषयों पर 117 वेबिनार व 100 से अधिक विशेष कक्षाएं आयोजित की गयी। इस बीच देश के विभिन्न विश्वविद्यालयों के 80 से अधिक कुलपति हमारे कार्यक्रमों के अतिथि बनें। इतना ही नहीं 20 से अधिक देशों के अतिथि व विद्यार्थियों ने ऑनलाइन कार्यक्रमों में शिरकत किया। इससे हमारी अलग पहचान बनी।

स्थानीय लोक कलाकारों को मंच देगा विश्वविद्यालय

कुलपति ने बताया कि विश्वविद्यालय में जल्द ही लोक कला केंद्र तथा बहुआयामी शोध केंद्र स्थापित होगा। लोक कला केंद्र के माध्यम से स्थानीय लोक कलाकारों को मंच प्रदान किया जाएगा। यहां लोक कलाकारों के संगीत की रिकॉर्डिंग की जाएगी। स्थानीय कौशल को बढ़ावा देने के लिए अतिथि शिक्षकों की प्रतिनियुक्ति की जाएगी। अपने क्षेत्र में लोकप्रिय कलाकारों जैसे- शारदा सिन्हा व मैथिली ठाकुर को बतौर गेस्ट बुलाया जाएगा। इसके लिए एक टीम काम कर रही है। विलुप्त हो रही सोहर व लोकगीत की परंपरा को जीवंत किया जाएगा।

माननीय कुलपति प्रो. संजीव कुमार शर्मा

विद्यार्थियों को मिलेगा 10 सिक्यूरिटी फीचर्स वाला अंकपत्र

अंकपत्र व प्रमाणपत्र में जालसाजी की भी शिकायत मिलती रहती है। इसे दूर करने के लिए हमने बड़ा कदम उठाया है। विश्वविद्यालय की ओर से विद्यार्थियों को अब 10 सिक्यूरिटी फीचर्स युक्त अंकपत्र उपलब्ध कराया जाएगा। इसे स्पेशल लेंस से ही देखा जा सकता है। इस अंकपत्र की विशेषता होगी कि यह फट नहीं सकता। मंत्रालय के नियमानुसार अंकपत्र पर कम से कम पांच सिक्यूरिटी फीचर्स का होना जरूरी है।

शुरू होंगे नए सर्टिफिकेट कोर्स

कुलपति प्रो. शर्मा ने बताया कि जल्द ही दो नए सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्स शुरू किए जाएंगे, इससे स्थानीय विद्यार्थियों को फायदा होगा। प्रो. शर्मा ने बताया कि शहर में कई तकनीकी संस्थान संचालित हो रहे हैं, जहां कुशल शिक्षक तक नहीं हैं। हमारे यहां वहीं डिग्री कुशल शिक्षकों द्वारा प्रदान की जाएगी तथा निजी संस्थानों से कम शुल्क पर डिग्री प्रदान की जाएगी।

साभार- दैनिक भास्कर

निर्णय में तेजी से विकास को मिली गति

कुलपति ने बताया कि अप्रैल, 2019 में पद संभालने के बाद से विकास के काम में लगा हूं। सभी कमेटियों की बैठक निर्धारित समय पर हुईं। निर्णय में तेजी आयी तो विकास को भी गति मिली। प्लानिंग कमेटी, डीन कमेटी, इसीई कमेटी, एकेडमिक काउंसिल आदि की बैठकें निर्धारित समय पर बुलाई गयी। 2019 में विश्वविद्यालय की वेबसाइट लांच की गयी। इससे विश्वविद्यालय को विस्तार मिला। पहले जिला स्कूल के कैंपस में 13 विभाग संचालित होते थे। इसके लिए मात्र 13 कक्षाएं भी थीं। मगर, अब विश्वविद्यालय के तीन कैंपस हैं। अलग–अलग जगहों पर विश्वविद्यालय की 47 कक्षाएं संचालित हो रही हैं।

शिक्षक व छात्रों की समस्याओं का त्वरित समाधान

तकरीबन डेढ़ साल से मैं यहां कुलपति हूं। इस बीच शिक्षकों व छात्रों की समस्याओं के समाधान में तेजी आयी है। हर तरह की शिकायतों के निवारण के लिए अलग–अलग लोगों को जिम्मेदारी सौंपी गयी है। अब शिक्षक व विद्यार्थी सीधे अपने संकाय के डीन या विभागाध्यक्ष से शिकायत करते हैं। वहीं से उन्हें समाधान मिल जाता है। केविवि में फिलहाल 18 राज्यों के शिक्षक सेवा दे रहे हैं। शिक्षकों को एकसूत्र में बांधने व एक–दूसरे की संस्कृति की पहचान के उद्देश्य से एक भारत–श्रेष्ठ भारत अभियान के तहत प्रदेशानुभूति का शुभारंभ किया गया। इसी का परिणाम है कि गांधीयन स्टडीज में ओड़िशा की पांच छात्राएं हैं। साथ ही केविवि मोतिहारी में 89 विद्यार्थी बाहर के राज्यों से हैं।

विश्वविद्यालय के लिए नया भवन बनाना प्राथमिकता

विश्वविद्यालय में लगातार विभाग व विद्यार्थियों की संख्या बढ़ रही है। सत्र–2020–21 के लिए स्नातक, परास्नातक, एमफिल और पीएच.डी पाठ्यक्रमों के विभिन्न विषयों में प्रवेश के लिए 9,630 आवेदन पत्र अभ्यर्थियों द्वारा भरे गए हैं। ऐसे में हमें विद्यार्थियों की सुविधा के लिए तत्काल नए भवनों की जरूरत होगी। सबसे अधिक पीएच. डी के 20 विषयों में 299 सीटों के लिए 4,552 अभ्यर्थियों ने फॉर्म भरा है। इसलिए नया भवन बनाना हमारी प्राथमिकता होगी। हम नैक की तैयारी में भी जुटे हैं। नए–नए कार्यों से विश्वविद्यालय प्रगति के नवीन सोपान गढ़ने को अग्रसर है।

संपादकीय

मुख्य संरक्षक
प्रो. संजीव कुमार शर्मा

मार्गदर्शक
प्रो. जी गोपाल रेड्डी

प्रधान संपादक
डॉ प्रशांत कुमार

संपादक
डॉ साकेत रमण

सलाहकार संपादक
प्रो. पवनेश कुमार
डॉ. अंजनी कुमार झा
डॉ. परमात्मा कुमार मिश्र
डॉ. सुनील दीपक घोडके
डॉ. उमा यादव
सुश्री शेफालिका मिश्रा

डिजाइन–लेआउट
अंकित कुमार
चिन्मयी दास

समाचार संपादन
शशिरंजन मिश्रा
विकाश कुमार

मीडिया अध्ययन विभाग, महात्मा गांधी केन्द्रीय विश्वविद्यालय बिहार, मोतिहारी द्वारा शैक्षणिक एवं आंतरिक वितरण हेतु प्रकाशित